एक कदम हम बढ़ें, एक कदम तुम
आओ मिलकर नाप दें, फासले चांद तक

7 नवंबर की रात को इलाहाबाद विश्वविद्यालय का जर्रा जर्रा गुलाबी और नीली रौशनी से नहाया हुआ था। सीनेट हॉल से लेकर विजयनगरम हॉल तक की इमारतें जैसे खुद पर इठलाती हुई खड़ी थी। उधर रात का दूधिया चाँद भी विश्वविद्यालय की 135 साल पुरानी इमारतों के गुम्बद से अठखेलियाँ कर रहा था। चाँद की नरम नरम रौशनी कभी किसी गुम्बद को चूमती तो कभी किसी झरोखे से झांक कर सीनेट हॉल के अंदर की तैयारियों का जायजा लेती। उधर आकाश के टिमटिमाते तारे इस बात पर अफ़सोस जाहिर कर रहे थे कि वे अगले दिन होने वाले दीक्षांत समारोह को देखने से मरहूम रहेंगे। विश्वविद्यालय के साथ साथ समूचे शहर को दीक्षांत समारोह का शिद्दत से इंतजार था।

8 नवंबर 2021 का दिन इलाहाबाद विश्वविद्यालय के लिए बेहद खास रहा। उस दिन जैसे सुबह–सुबह सूरज ने घास पर पड़ी ओस की बेफिक्र बूंदों को दुलारकर जल्दी ही जगा दिया। दीक्षांत समारोह की सारी तैयारियां पूरी हो चुकी थी। सुबह के 9 बजते बजते विश्वविद्यालय परिसर अपनी पूरी भव्यता और गरिमा के साथ आसमान में सर उठाए दीक्षांत समारोह की मेजबानी को तैयार था। आज विश्वविद्यालय के 135 साल पुराने ताज में एक और नगीना जड़ने वाला था। अतीत के गौरवशाली इतिहास में आज एक सुनहरा पन्ना जुड़ने वाला था।

सुबह ठीक 10 बजे केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान, कुलपति प्रो संगीता श्रीवास्तव, कुलाधिपति श्री आशिष कुमार चौहान के साथ साथ कार्य परिषद और विद्वत परिषद के समस्त सदस्य जब कतारबद्ध होकर सीनेट हॉल की ओर बढ़ें तो एक पल को ऐसा लगा कि संगम में लुप्त हो चुकी सरस्वती विश्वविद्यालय में प्रकट हो गई। नीचे रेड कार्पेट और उसके ऊपर सुनहरे लाल गाउन में सुसज्जित विद्वानों को देखते ही एक अलग अनुभूति हो रही थी। सीनेट हॉल में प्रवेश करने से पहले माननीय शिक्षा मंत्री और कुलपति महोदया ने दो नए छात्रावासो और स्टूडेंट्स एक्टिविटी सेन्टर का उद्घाटन किया और इसी के साथ विश्वविद्यालय की पुरानी इमारतों के साथ तीन नए भवन भी जुड़ गए। आने वाले कल में इन्हीं इमारतों के साथ न जाने कितने किस्से जुड़ेंगे। न जाने कितने छात्रों की कहानियों में ये इमारतें हमेशा हमेशा के लिए शामिल हो जाएगी। ये तीन नए भवन विश्वविद्यालय की आधारभूत संरचना में बड़े पड़ाव हैं।

ठीक 10 बजे दीक्षांत समारोह आरंभ हुआ। कुलपति प्रो संगीता श्रीवास्तव ने ऋग्वेद के 10 वें मंडल के नासदीय सूक्त :–

"हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥"

के साथ अपने दीक्षांत भाषण की शुरुआत की। उन्होंने कहा कि प्रयागराज की ऐतिहासिक धरती पर स्थापित इलाहाबाद विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में सबका स्वागत है । इलाहाबाद विश्वविद्यालय के साथ 135 वर्षों का गौरवपूर्ण इतिहास जुड़ा हुआ है। देश के हर राज्य और हर हिस्से में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से पढ़े हुए विद्वान, प्रशासक और राजनेता मौजूद हैं। राष्ट्र निर्माण में इलाहाबाद विश्वविद्यालय की महत्वपूर्ण भूमिका से कोई इनकार नहीं कर सकता। कुलपति प्रो संगीता श्रीवास्तव ने आगे कहा कि आज दीक्षांत समारोह के अवसर पर हमारे सामने कर्मठ छात्रों की एक नई पीढ़ी खड़ी है। आज के छात्र ही कल के राष्ट्र निर्माता बनेंगे। उन्होंने नई शिक्षा नीति के क्रियान्वयन पर बल देते हुए कहा कि इलाहाबाद विश्वविद्यालय में नई शिक्षा नीति को अपनाते हुए 10 नए पाठ्यक्रम बनाए हैं। कुलपति ने पीएचडी में नवाचार की जरूरत पर भी बल दिया। इस अवसर पर उन्होंने विश्व के शीर्ष 2% वैज्ञानिकों में इलाहाबाद विश्वविद्यालय में कार्यरत 8 प्रोफेसरों के शैक्षणिक योगदान का भी जिक्र किया।

कुलपति प्रो संगीता श्रीवास्तव ने कहा कि शैक्षणिक गतिविधियों के साथ साथ वे विश्वविद्यालय में आधारभूत संरचनाओं के विकास के लिए भी प्रयासरत हैं। इसी क्रम में आज एक पुरुष छात्रावास, एक महिला छात्रावास तथा मेजर ध्यानचंद स्टूडेंट एक्टिविटी सेंटर का भी उद्घाटन किया गया। आने वाले दिनों में निराला आर्ट गैलरी भी नए रूप में दिखेगी।

कुलपति के दीक्षांत भाषण के बाद कुलाधिपति श्री आशिष कुमार चौहान ने उपाधि और पदक वितरण की प्रक्रिया आरम्भ की। दीक्षांत समारोह में शैक्षिक सत्र 2018–19 तथा 2019–20 के मेधावी छात्र और छात्राओं को 264 पदक और 550 को पीएचडी की उपाधि दी गई। हाथ में पदक और आंखों में सपने लेकर सैकड़ों छात्र भविष्य की ओर कदम बढ़ा रहे थे।

मुख्य अतिथि के तौर पर दीक्षांत समारोह को संबोधित करते हुए केंद्रीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान ने कहा कि इलाहाबाद महर्षि भारद्वाज की तपोभूमि है। यह चंद्रशेखर आजाद की बलिदान भूमि है। प्रयागराज से उनका अनोखा संबंध है। केंद्रीय शिक्षा मंत्री बनने के बाद वे पहली बार किसी केंद्रीय विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में शिरकत कर रहे हैं। उन्होंने नई शिक्षा नीति पर चर्चा करते हुए कहा कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ–साथ समाजोपयोगी शोध भी वक्त की जरूरत है। सिर्फ रिसर्च जनरल के लिए शोध न किया जाए, बल्कि ऐसे शोध पर जोर दिया जाए जिससे समाज का हित हो। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में दीनदयाल उपाध्याय चेयर की स्थापना की भी घोषणा की। शिक्षा मंत्री ने कहा कि इलाहाबाद विश्वविद्यालय में रिक्त पड़े हुए पदों को जल्द ही भरा जाएगा। उन्होंने केंद्र सरकार से हर संभव मदद का आश्वासन दिया।

दीक्षांत समारोह में उत्तर प्रदेश सरकार के कैबिनेट मंत्री सिद्धार्थ नाथ सिंह, नंद गोपाल नंदी, प्रयागराज की सांसद रीता बहुगुणा जोशी , फूलपुर की सांसद केसरी देवी पटेल इत्यादि भी उपस्थित रहे।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो संगीता श्रीवास्तव जिस तत्परता और कर्मठता से विश्वविद्यालय को आगे ले जाने को तत्पर हैं वो हम सबके लिए प्रेरणादायक है। कुलपति अक्सर इन पंक्तियों का जिक्र करती हैं, और ये पंक्तियां भी उनके व्यक्तित्व पर सटीक बैठती हैं :–

The woods are lovely, dark, and deep,
But I have promises to keep,
And miles to go before I sleep,
And miles to go before I sleep.

- Robert Frost

गहन सघन मनमोहक वनतरू, मुझको आज बुलाते हैं ,
किन्तु किये जो वादे मैंने याद मुझे आ जाते हैं।

अभी कहाँ आराम बदा, यह मूक निमंत्रण छलना है ,
अरे अभी तो मीलों मुझको, मीलों मुझको चलना है।

(रॉबर्ट फ्रॉस्ट की इस कविता का हिंदी अनुवाद हरिवंश राय बच्चन ने किया है।)

दीक्षांत समारोह को सफल और भव्य बनाने में कुछ ऐसे लोगों की भूमिका से इनकार नहीं किया जा सकता है जिन्होंने नेपथ्य में रहकर इस पूरे समारोह को गरिमा प्रदान की। कुलसचिव प्रो नरेंद्र कुमार शुक्ल, विश्वविद्यालय के कुलानुशासक प्रो हर्ष कुमार, डीन सीडीसी प्रो पंकज कुमार, कला मर्मज्ञ प्रो अजय जेटली, प्रो के एन उत्तम, डॉ आशीष खरे के साथ साथ विश्वविद्यालय परिवार के हर सदस्य ने बखूबी अपनी भूमिका का निर्वाह किया। बड़े अवसर हमें न सिर्फ एकजुट करते हैं बल्कि हमारे भीतर टीम भावना का भी संचार करते हैं। यह दीक्षांत समारोह विश्वविद्यालय के इतिहास के साथ–साथ हमारी स्मृति में भी दर्ज हो गया। सैकड़ो छात्र वर्षों तक मुड़ मुड़ कर इन दिनों को याद करेंगे।

जय जय तुम्हारी जय तुम्हारी विश्वविद्यालय इलाहाबाद..
ज्ञान उद्गम, ज्ञान संगम , ज्ञान के इतिहास
शत शत नमन है विश्वविद्यालय इलाहाबाद....